IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विद्या बिन्दु सिंह के कथा साहित्य में चित्रित धार्मिक पक्ष

निर्देशिका : डॉ. पिंकी पारीक
शोधार्थी : सरिता पारीक
वनस्थली विद्यापीठ

सारांश –

भारत धर्ममय देश है। यहाँ लोक मानस के प्रत्येक विश्वास में धार्मिक भावनाएँ निहित है। धर्म का आधार आध्यात्मिक असंतोष तथा भय है। जन–मानस देवी–देवताओं की लोक–रक्षक के रूप में उपासना कर भय निवारण कर संतोष की प्राप्ति करता है। विद्या जी का कथा साहित्य भी धार्मिकता से अछूता नहीं रहा है। इन्होंने जप–तप, यात्रा, दान, स्नान, व्रत, भाग्यवाद, कर्मवाद, फलवाद, पाप–पुण्य के विश्वास का वास्तविक चित्रण उकेर कर तत्कालीन धार्मिक परिवेश को जीवंत किया है।

बीज शब्द : धर्म, आध्याम, भाग्यवाद, कर्मवाद, फलवाद, पाप–पुण्य।

भारतीय संस्कृति में सदैव ही अनेको सांस्कृतिक स्तर संग्रहित रहे है। उसके अनुरूप धर्म एवं धार्मिक आस्था भी विविध रही है। धर्म से अभिप्राय धारण करने से है। जो नियम, सिद्धांत, कर्त्तव्य और सदाचार का समुच्चय है। जिन्हे व्यक्ति और समाज धारण करके अपने मौलिक स्वरूप को बनाए रखते हैं। प्रत्येक समाज अपनी–अपनी धार्मिक मान्यताओं व आस्था के अनुसार इसकी पालना में अनेक क्रिया–कलाप करता है। जो धार्मिक कृत्य को श्रेणी में आते हैं। धार्मिक कृत्यों का निभाने के पीछे विश्वास और आत्मिक संतुष्टि का भाव निहित होता है।

विद्या बिन्दु सिंह के कथा साहित्य में धर्म लोक संस्कृति और लोक जीवन के साथ आत्मीकरण होकर विविध कृत्यों के रूप में उभरता है। इन्होंने चेतनता के साथ धर्म को रूढ़िवादिता के स्थान पर लोक सम्मत एवं जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है।

प्रत्येक मनुष्य में धर्म के प्रति आस्था व अनुभूति व्यक्तिगत होती है। इसी कारण धर्म में संकीर्णता आती है, परन्तु जब धार्मिक भावना का आधार विवेक एवं तर्क सम्मत होता है तो यह शुभकारी हो जाता है। पूजा–पाठ, यज्ञ, परोपकार, धार्मिक मंत्र, दान–दक्षिणा आदि कर्मकाण्डों के माध्यम से ही धर्म की अभिव्यक्ति होती है। इन सभी धार्मिक कृत्यों एवं क्रियाकलाप से धर्म भाव सुदृढ़ होता है।

विद्या जी ने 'शिलान्तर' उपन्यास में राधिका के माध्यम से धर्म की सार्थक व्याख्या की है। ''वे धर्म के प्रति दृढ़ आस्था रखते हैं और जो व्यक्ति धर्म के प्रति निष्ठा रखता है, वह धर्म को खुली आँखों से देखता और जाँचता भी रहता है। धर्म बहुत व्यापक अर्थ रखता है, जो उसके व्यापक अर्थ को समझ लेता है, वह छोटी–छोटी संकीर्ण विचारधाराओं से ऊपर उठ जाता है।''[1]

धर्म का वास्तविक स्वरूप जीवन में नित्य क्रिया से उद्‌भूत होता है एवं धर्म की परिणति जीवन में धार्मिक कृत्य व क्रिया–कलापों में परिलक्षित होती है। ''उठते ही नहाते–धोते, पूरा दुर्गा सप्तशती का पाठ जोर–जोर से बोलते जाते। फिर मंदिर की सफाई करते, पौधों को जल चढ़ाते–चढ़ाते रामचरित मानस का सुंदर कांड सस्वर करते। भोग आरती के समय घंटी बजाकर शंख बजाते। पूरा मौहल्ला उनकी शंख ध्वनि से जग जाता।''

''जहाँ तक शंख–ध्वनि जाती है अनिष्ट दूर हो जाता है, रोगाणु मर जाते हैं।''[2] विद्या जी ईश्वर में विश्वास व्यक्त करती है, किन्तु साथ ही धार्मिक कृत्य 'शंख ध्वनि' को सार्थक तर्क के साथ प्रस्तुत करती है।

हवन–यज्ञ अभीष्ट पूर्णता हेतु, ईश्वर को भोग लगाने एवं पूर्वजों की स्मृति हेतु किये जाते है। रामायण में वर्णित है राजा दशरथ को यज्ञ विधान द्वारा पुत्र प्राप्ति की अभिलाषा पूर्ण हुई थी ''बाबा ने बताया था कि यहाँ श्रृंगी ऋषि का आश्रम है, जिन्होंने राजा दशरथ को पुत्र दिलाने का यज्ञ करवाया था।''[3] 'अंधेरे के दीप' उपन्यास में विद्या जी ने सतयुग में प्रचलित यज्ञ विधान की ओर संकेत किया है।

संताप निवारण हेतु ही हवन, कथा व पूजा–पाठ का विधान नहीं है। वरन् मंगल आरम्भ एवं परिवार में शुभ कार्य पूर्ण होने पर भी धार्मिक क्रिया– कलापों का विधान है। ''विद्या जी ने 'हड़ताल' कहानी में कार्य पूर्णता पर मनौती पूरी करने के विधान को रोचकता के साथ प्रस्तुत किया है। 'वन्दनवार' कहानी एवं 'शिलांतर' उपन्यास में नवीन गृह प्रवेश पर यज्ञ–हवन का चित्रण है।

संकट–निवारण एवं वांछित मनोकामना पूर्णता पर दान की प्रवृति मानव–जीवन में प्रसृत है। विद्या जी ने अपनी कथाओं में दान को पूर्ण अभिव्यक्ति दी है। दान का अर्थ स्वार्थ रहित प्रसन्न मन से निर्धन को अन्न, धन एवं वस्त्र आदि भेंट देना है। सनातन धर्म में दान को मान्यता प्राप्त है। इहलोक में दान कर परलोक सुधारने की भावना, जीवन में सुख समृद्धि एवं जन्म–मृत्यु से मुक्त होकर मोक्ष की कामना जहाँ लोक में व्याप्त है, वही खुशी को बांटने की दृष्टि भी है। विद्याजी ने विशेष तिथियों एवं पर्वों पर दान का वर्णन किया है। वे 'नीरमती' उपन्यास में मकर संक्राति व लोहड़ी पर्व पर दान के महत्व पर संकेतात्मक रूप में लिखती है। ''संक्राति पर क्या–क्या बनना चाहिए, क्या–क्या दान देने के लिए मंगाना है।''[4]

भारत में लगने वाले विभिन्न धार्मिक मेलों में कुम्भ मेले का विशेष स्थान है। ये मेले संस्कृ ति के प्राण तत्व है, जो युवा पीड़ी को सांस्कृतिक परम्परा से जाड़ने का कार्य करते हैं। विद्या जी के कथा साहित्य में कई स्थानों पर मेलों व तिथि विशेष पर होने वाले स्नान एवं तीर्थ–यात्रा का उल्लेख है। धार्मिक मान्यातानुसार गंगाजल को अमृत तुल्य बताया है। इस अवसर पर तीर्थ–स्थान पर कल्पवास दान–पुण्य गंगा–स्नान, पूजा–पाठ, भजन–दर्शन का शुभ फल बताया है। मान्यता है महापर्व पर गंगा एवं अन्य पवित्र नदियों में स्नान करने से संताप का निवारण होता है। ''संगम के शीतल जल में डुबकियाँ लगाते रहे, जैसे कि मन का सारा संताप पवित्र जलधारा को अर्पण कर रहे हों। पत्नी की आत्मा की शांति के लिए गोदान किया, पंडो और भिखारियों को दक्षिणा देकर अपार शांति का अनुभव करते हुए बेटे के घर दो बजे तक लौट आए।''[5]

भारत में कण–कण को ईश्वरीय अंश मानकर जनता शिल में भी ईश्वरीय स्वरूप की कल्पना कर पूजन करतो हैं। इसलिए भारत के गाँव–देहात में अनेक देवालय, थान मौजूद है, जहाँ देवी–देवताओं को लोक संरक्षण के रूप में पूजा जाता है।

विद्या जी के कथा साहित्य में राम, कृष्ण, दुर्गा, सूर्य एवं अनेकानेक स्थानीय देवी–देवताओं का चित्रण हुआ है, जो उनके बहुदेव विश्वास का द्योतक है। व्यक्ति दैनिक जीवन के क्रिया–कलाप में, शारीरिक, मानसिक कष्ट में, आर्थिक विपन्नता में मंगल–अमंगल की स्थिति में प्रत्येक सुख–दुख में अपने आराध्य का मनन करके आध्यात्मिक जुड़ाव महसुस करता है। 'सुरसती बुआ' कहानी में 'जालपा माई' से संतान प्राप्ति की कामना का वर्णन है, तथा चेचक को 'देवी निसरी' है कहकर स्थानीय लोग देवी शीतला माता के प्रकोप के रूप में देखते है यही कारण है कि चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को ठण्डे भोजन से शीतला माता की पूजा की जाती है। विद्या जी ने काली मां और डीह बाबा आदि लोक देवी–देवता

के द्वार पर कार्य–सफलता के लिए मनौती मानना और कार्य सिद्धि पर भोग लगाकर भोग करना जैसे कृत्यों का यथार्थ चित्र उकेरा है।

विद्या जी ने अपने कथा साहित्य में पर्व–त्योहारों, लोक रीतियों का सूक्ष्माति सूक्ष्म अंकन किया है। जिसमें लोक–मानस धार्मिक अनुष्ठानों को उल्लास के साथ निभाते है। इन्होंने विभिन्न लाक गीतों और लोक कथाओं को धर्म से जोड़कर प्रस्तुत किया है। 'शिवपुर की गंगा भौजी' उपन्यास में शिव–पार्वती की लोक कथा में माता पार्वती को सुहाग देवी के रूप में प्रतिष्ठित किया है। माता पार्वती के आशीर्वाद से धोबी जाति की स्त्री को अखण्ड सुहाग का वरदान है। अवध क्षेत्र में विवाह के अवसार पर धोबन को अखण्ड सुहाग का आशीर्वाद देने के लिए बुलाया जाता है। 'शिवपुर की गंगा भौजी' उपन्यास मं गंगा भौजी माता से विनती करती है – 'हे गौरा पार्वती! सरला बिटिया के दुःख मेटल जाय, ओकर सुहाग चुकि गयल बाय, हमरा के राहि देखावा माई! फिर हुकुम कि ओहिकाँ सोहाग देई।''[6] आज भी शिव–पार्वती और गंगा की कथा 'अहल्या उद्धार' की कथा, तुलसी कथा आदि कथाएँ धार्मिक आस्था के रूप में लोक कंठ पर आरूढ़ है।

मानव आदिकाल से ही विविध प्राकृतिक उपादानों की पूजा–अर्चना करता आया है। प्रकृति मानव की सहचरी है, वह हमेशा से मानव के सुख–दुःख की साथी और परिवर्तन की साक्षी रही है। विद्या जी भी सदैव प्राकृति उपादानों क संरक्षण की पोषक रही है। इन्होंने प्रकृति को निर्माती, सहयोगी एवं पूज्य रूप में चित्रित किया है। इनके कथा–साहित्य में स्थान–स्थान पर पर्यावरणीय संरक्षण भाव दृष्टिगोचर होता है। जिसमें चाँद–सूरज, नदियों, विभिन्न, वनस्पतियों एवं जीव–जन्तुओं के पूजन की मान्यताएँ देखी जा सकती है। रामचरित मानस में लिखा है –

''छिति जल पावक गगन समीरा।

पंच रचित अति अधम शशीरा।।[7]

अर्थात् मानव शरीर वायु, जल, अग्नि, आकाश एवं पृथ्वी आदि प्रकृति के पंच तत्वों से बना है।

सनातन धर्म नदियों को मया कहकर सम्बोधित किया जाता है। क्योंकि ''नदी को माँ की संज्ञा दी गई। वह माँ की तरह सबका पोषण करती है, शीतलता देती है और उसके हर दुःख–ताप और मल को धोकर शुचिता प्रदान करती हैं। इसलिए गंगा का नाम लेते ही तन–मन दोनों पवित्र हो जाते हैं।''[8]

भारतीय जन–मानस नदियों के समान पेड़–पौधों को भी पूज्य मानता है। पीपल के वृक्ष पर अनेक देवताओं का निवास स्थान होने से इसे पवित्र माना जाता है। शास्त्रों में पीपल को ब्राह्मण वृक्ष कहा गया है। इसी कारण घरेलू कार्यों में इसका प्रयोग निषेध एवं धार्मिक कार्यों में पीपल के पत्तों, लकड़ी का विशेष महत्व है। ''पीपल की जड़ में ब्रह्म तने में विष्णु और अग्र भाग में शिव की कल्पना की गयी है। शास्त्रों में कहा गया है कि इसका देखने से आधि–व्याधि से मुक्ति मिलती है स्पर्श करने से पाप नष्ट होते है और जो पीपल वृक्ष के आश्रय में आ जाता है वह चिरंजीवी होता है।''[9] नीम एवं तुलसी औषधीय गुणों से युक्त वनस्पति है। नीम से शीतला माँ का वास मान कर उसकी हल्दी, लौंग के जल से पूजा की जाती है। पुराणों में तुलसी को अत्यन्त पवित्र माना है। तुलसी भारतीय घरों की पहचान है, जहाँ प्रतिदिन प्रातः काल में जल, अक्षत, रोली से तुलसी पूजन एवं सांयकाल में दीपक जलाकर संध्या आरती की जाती है – ''अरे भाँजी! दीपा–बाती का समय हो गया। तुलसी चौरा भी आज नहीं लीपा।''[10]

विद्या जी के अनुसार मनुष्य जितना प्रकृति से दूर होता जा रहा है, उतना ही आधि–व्याधि से पीड़ित हो रहा है। 'बाघ बाबा का चौरा' कहानी प्रकृति से कटते जा रहे समाज को पुनः प्रकृति से जोड़ने का सचेतन प्रयास है। चीनी बाबा, शिवपुर की गंगा भौजी, शिलांतर, नीरमती, बनदेई, वन्दनवार, बारी–बारी, दीप्ति आदि कहानियों में वृक्षों, पृथ्वी, नदियों को पूज्य माना है। विशेष तिथियों और पवों पर पूजा अर्चना एवं स्नान का विशेष महत्व बताया है।

नीम, पीपल, आँवला और वट वृक्ष की पूजा और गंगा, यमुना, सरयू में स्नान, दान एवं तालाब, कुओं की पूजा को शुभता का प्रतीक बताया है। कथा–साहित्य में प्रकृति चित्रण उकेरते हुए इनका प्रकृति संरक्षण एवं धार्मिक दृष्टिकोण उजागर हुआ है।

सूर्य और चन्द्रमा को भी विशेष अवसरों पर पूजन की परम्परा रही है। चतुर्थी व पूर्णिमा तिथियों पर चन्द्रमा को जल अर्ध्य करके, अक्षत रोली अर्पण कर व्रत खोलने का विधान है तो सूर्य को जीवन–शक्ति व ओज का प्रतीक माना जाता है। इसी कारण संतान जन्म के अवसर पर शिशु के स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना हेतु सूरज पूजन की परिपाटी है, जिसे विद्या जी ने अपने साहित्य में दर्शाया है।

सूर्य, चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति, शुक्र शनि, मंगल, राहू केतु आदि ग्रहों को नवग्रह देवता के रूप में पूजा जाता है। विवाह एवं विशेष रूप से नवीन गृह प्रवेश के अवसर पर नवग्रह पूजा का प्रावधान है। जिससे मांगलिक कार्य निर्विघ्न पूर्ण हो जाये। नवग्रह पूजा का संकेतात्मक चित्रण इनके साहित्य में देखा जा सकता है।

विद्या जी ने जहाँ पारम्परिक धार्मिक क्रिया–कलापों को झाँको उपस्थित की है, वही कथा–साहित्य के माध्यम से धार्मिक कृत्यों में आ रहे बदलाव का खाका खींचा है। वर्तमान में धर्म मं कम का स्थान अर्थ ने ले लिया है, जिसके कारण धार्मिक कृत्यों का पर्याय आस्था विश्वास नहीं केवल अर्थ रह गया है। 'शिलांतर' उपन्यास में बदलते धार्मिक कृत्यों का यथार्थ चित्रण हुआ है। मृतात्मा की शांति के लिए कर्मकांड करना कर्त्तव्य के साथ परिवार के लिए दुखद क्षण होता है, परन्तु असंवेदनशील पंडा अपने कर्त्तव्य को भूलकर धर्म के लौकिक एवं शास्त्रीय कृत्यों के नाम पर दुखी परिवार से अधिक से अधिक धनार्जन के प्रयास में रहता है। ''यह तुम्हारे पति के नाम आखिरी दान है, जितना दे सको, कर दो।''

पारो ने पूछा – 'कितने का संकल्प करना चाहती हो, बताओं तो?'

राधिका ने कहा – ''भाभी'? बस बीस आने का''

पंड़ा लगभ डपटते हुए बोला– 'अरे देवी! कंजूसी न करो, उनकी आत्मा को कष्ट होगा। अपने स्वर्गीय पति के लिए अपना कर्त्तव्य पूरा करो।'' राधिका ने सवा रुपए और कुश पंडा के हाथ पर रख दिए, बोली मेरी हालत वे जानते है। उन्हें इसी में संतोष होगा, आप चिंता न करें।''

पंडा तिलमिला उठा–धोर कलयुग आ गया है। पति ने कितना कुछ किया होगा तन का, मन का, धन का सब सुख दिया होगा। उसके जाते ही आँखे फेर लीं।''[11] पूरे घटनाक्रम में मृत होती संवेदनाओं एवं बदलते धार्मिक कृत्यों का सत्य चित्रण है।

हिन्दू धर्म में स्त्रियों को श्मशान घाट पर जाने एवं त्रयोदशः तक के संस्कार निभाने की मनाही है। ये सभी संस्कार पुरुष ही निभाते हैं। आज अनेक कारणों से इस धार्मिक व्यवस्था में परिवर्तन आने लगा है। 'पिंडाइन अइया' कहानी में पिंडा बाबा की कोई औलाद नहीं है। ये दुःख भी उन्हें उनक परिवार ने दिया था, इसलिए उनकी मृत्यु पर सारे कर्त्तव्य पिंडाइन अइया निभाती है। 'अइया ने स्वयं पति को मुखाग्नि दी।''[12]

मानव जीवन में संस्कारों की विशेष भूमिका होती है। सभी संस्कार पुरुषों द्वारा निभाए जाते हैं। बालक का नामकरण और विद्यारंभ संस्कार पिता के नाम एवं गोत्र को मंत्रों के साथ उच्चारित करते हुए पूर्ण होता है। पंडित जी द्वारा संस्कारों को निभाने के लिए पति का नाम एवं गोत्र पूछे जाने पर मातंगी कहती है, माँ जन्म देती है, वह पालती–पोषती है, जैसे सार्थक तर्कों से नीरमती के नाम एवं गोत्र के साथ संस्कार सम्पन्न करवाकर धार्मिक

परम्पराओं में बदलाव का संकेत देती है। जो विद्या जी की चेतना का प्रमाण है, उन्होंने धर्म को ज्ञान के आधार पर तर्क द्वारा स्वीकार किया है।

धर्म का एक पक्ष आध्यात्मक भी है। जिसका जन्म धर्म की पावन धरा पर होता है। भारतीय मानस का जीवन आध्यात्मय है। इनकी दृढ़ मान्यता है कि भौतिक जगत की सभी क्रियाएँ किसी दैवीय शक्ति द्वारा संचालित है। लोगों का विश्वास है ईश्वरोय संकेत के बिना कोई कार्य संभव नहीं है। भाग्यवाद कर्मफल, जन्मान्तरवाद, आध्यात्मिक जीवन की मूल आस्थाएँ है।

'अंधेरे के दीप' में गरीब परिवार की बेटी झिनकी का विवाह–सम्बन्ध रईस, साधन सम्पन्न परिवार में होने पर सभी उसके भाग्य को सराहते है – ''यह झिनकी का प्रबल भाग्य ही होगा या रंजना व उसके पति का प्रयत्न कि यह अवसर आया।''[13]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भाग्यवाद, कर्मवाद के विश्वास से विद्या जी का साहित्य भी अछूता नहीं रहा है। विद्या जी के साहित्य में इन सभी सर्वमान्य वादों की यथा स्थान स्थितिनुसार अभिव्यक्ति हुई है। इन्होंने कथाओं में धार्मिक क्रियाकलापों का सूक्ष्मता के साथ वास्तविक चित्रण किया है। जप–तप, यात्रा, दान, स्नान आदि के साथ धार्मिक परिवेश को जीवंत किया है। साथ ही धार्मिक–कृत्यों में होने वाले परिवर्तनों को लेखिका ने यथार्थ अभिव्यक्ति प्रदान की है, जो लोक के प्रति इनकी चेतना को दर्शाता है।

सन्दर्भ सूची –

1 शिलांतर, विद्या बिन्दु सिंह, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013, पृ. सं–130

2 काशीवास, बारी–बारी, विद्या बिन्दु सिंह, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2012, पृ.सं.–65–66

3 हिरण्यगर्भा, अँधेरे के दीप, विद्या बिन्दु सिंह, ग्रंथ अकादमी, प्रथम संस्करण–2015, पृ.सं.–61

4 नीरमती, विद्या बिन्दु सिंह, ज्ञान गंगा, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2010, पृ.सं.–100

5 काशीवास, बारी–बारी, विद्या बिन्दु सिंह, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2012, पृ.सं.–71

6 हिरण्यगर्भा, शिवपुर की गंगा भौजी, विद्या बिन्दु सिंह, ग्रन्थ अकादमी, प्रथम संस्करण–2015, पृ.सं.–85

7 रामचरित मानस, टीकाकार हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीताप्रेस, गोरखपुर, सं. 2079, तीन सौ सैंतीसवाँ पुनर्मुद्रण, पृ.सं.–565

8 हिरण्यगर्भा, शिवपुर की गंगा भौजी, विद्या बिन्दु सिंह, ग्रन्थ अकादमी, प्रथम संस्करण–2015, पृ.सं.–69–70

9 बाघ बाबा का चौरा, विद्या बिन्दु सिंह, सौम्या बुक्स, प्रथम संस्करण–2013, पृ.सं.–11

10 नीरमती, विद्या बिन्दु सिंह, ज्ञान गंगा, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2010, पृ.सं.–99

11 शिलांतर, विद्या बिन्दु सिंह, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2013, पृ. सं–21

12 काशीवास, पिंडाइन अइया, विद्या बिन्दु सिंह, ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2012, पृ.सं.–86–87

13 हिरण्यगर्भा, शिवपुर की गंगा भौजी, विद्या बिन्दु सिंह, ग्रन्थ अकादमी, प्रथम संस्करण–2015, पृ.सं.–49